प्रकाशक
भारतीय विद्या मन्दिर
रतन बिहारीजी का मन्दिर
बीकानेर

आवरण चित्र
मंजु नाहटा

मूल्य
साठ रुपया

मुद्रक
भागचन्द सुराना
सुराना प्रिन्टिंग वर्क्स
205 रवीन्द्र सरणी कलकत्ता-1

प्रवेश

विराट वामन बन कर ही लीला कर सकता है
अन्यथा वह तो स्वयं असमीप है।
विटप बीज में सत्य शब्द में समाकर ही
फल और अर्थ देता है
यह अनुभूति ही इस कृति की अभिव्यक्ति है।

११ सितम्बर १९९१

कन्हैयालाल मिश्र

लीला

भाईजी
माधोदासजी मूधड़ा
को

१

साधन
सगुण
साध्य
निर्गुण।

२

सभ्यता

आचरण

संस्कृति

सदाचरण

परम्परा

अनुसरण

संस्कार

अवतरण ।

३

दण्ड
सत्ता
क्षमा
सत ।

४

बन जाता
अनगढ
पाषाण
प्रतिमा
नहीं देखती
श्रद्धा
शिल्प ।

५

माध्यम
सपन का
नयन
स्मृति का
मन ।

६

बिना

श्रोता

नहीं होती

स्थापित

शब्द की सत्ता।

७

नहीं
प्रार्थना
अभावों की
चुप्पी
वह
स्वयं तक
पहुँचने की
सुनसान गली।

८

चिन्तन
ऊर्जा
चिन्ता
मूर्च्छा।

१

प्रण
प्रतिमा
जीवन
परिक्रमा।

१०

दीप
दर्शन
दपण
बन्धन !

११

अव्यय

समय

व्यय

माध्यम

वय।

१२

निद्रा
मृत्यु का
पूर्वाभिनय।

१३

मन
पुर
चित्त
अन्त पुर

१४

सत्य
बिन्दु
कल्पना
सिन्धु।

१५

चेतना
चिन्मय
मन
मृण्मय।

१६

अनुग्रह
अहेतु
कृपा
सहेतु।

१७

यश
प्रदत्त
कीर्ति
कर गत।

१८

सर्वज्ञ

मै

से

अनभिज्ञ।

१९

विश्वास
विवशता
श्रद्धा
क्षमता।

२०

कर्त्तव्य
लोक सम्मत
कर्म
स्व-मत।

२१

दान
सकाम
त्याग
निष्काम।

२२

शब्द
शिशु
सन्दर्भ
जनक।

२३

आशा
अनागत
विश्वास
आगत।

२४

चाहता
बीज
आवरण
अंकुर
निरावरण।

२५

उज्ज्वल
है
तम का
भविष्य।

२६

पथ

स्वयं

न

इति

न

अथ।

२७

स्वप्न
सत्य की
अमूर्त कला।

२८

वर्तमान
का
क्षण
अतीत
का
सस्मरण !

२९

सौरभ का
सत्य
उर्ध्व गमन
फल का
पतन !

३१

कर्त्ता

मन

साक्षी

चेतन।

३०

विश्वकर्मा

मन

इन्द्रिया

उपकरण।

३३

ऋत
अकथ
मोक्ष
अपथ।

३२

देखता
जो
अश में
समग्र
वह
परम हस।

३५

वह
धूम्र
काजल
मिला
जिसे
स्नेह का
सम्बल!

३४

विषधर का

घर

भक्ष्य का

विवर।

३५

वह
धूम्र
काजल
मिला
जिसे
स्नेह का
सम्बल।

३६

कविता
चिड़िया
कला
नीड़ ।

३७

देता सागर
हर बूंद को
मझधार से
मिलने का अवसर।

३८

प्रकृति का
पुरुष से
विद्रोह
प्रलय।

३९

नही
पचतत्वों में
काल की गणना
वह
आत्मा का
गुणधर्म।

४०

रंग

रवि

रस

चन्द्रमा

छवि

माटी।

४१

करता समय
स्वय को
बीज में व्यतीत
जबतक
नहीं आता
उगने का
क्षण।

४२

सूर्य
यज्ञाग्नि
पृथ्वी
विभूति।

४३

ऋचा
अनुभूति की
त्वचा।

४४

भूमिका

छन्द

उपसंहार।

४५

संशय
प्रथम चरण
विश्वास
मंजिल।

४६

नहीं
कंकर
वज्र का
लक्ष्य
शिखर।

४७

पूजा
समर्पण की
अनुजा।

४८

संगीत
गीत का
सहचर
नहीं अनुचर!

४९

आग्रह
श्रृंखल
पूर्वग्रह
अर्गला।

५०

रहा
अविद्ध
शूल नोक पर
तुहिन–कण
वह सिद्ध !

५१

हर
शूल
कोई
दिशा हारा
फूल।

५४

नहीं
शून्य
निर्वेद
मिटता
प्रकाश
बरसाता
मेघ
वह सवेद।

५५

उग आते
डाल पर
शूल
नहीं खिलते
बिना वृन्त फूल।

५६

नहीं अरण्य
देखता
विहग
विटप
जो शरण्य।

५७

विस्मय
प्रेरणा
सशय
गवेषणा।

५८

नहीं रोता
तिक्त
विषैली ममाखी का
संचित मधु।

५९

नहीं
कर सकता
विनष्ट
बूंद का अस्तित्व
सागर का
अहर्निश मन्थन।

६०

कुण्ठा मुक्त
मन
वैकुण्ठ।

६१

अध्ययन
जोताई
स्वाध्याय
बोआई !

६२

वैदुष्य ऋण
मनीषा
मूल धन।

६३

धर्म
स्थिति
अधर्म
च्युति।

६४

बिना
किये भग
वर्णमाला का
अनुशासन
नहीं बन पायेंगे
ध्वनि धर्मा
अक्षर
अर्थधर्मा शब्द।

६५

रहती
अस्त होने
पर भी
सूर्य की सत्ता
अन्यथा
नहीं जलता
कोई दीप।

६६

करता
अनुक्षण
परिवर्तन
सृष्टि का
नियमन।

६७

हर तत्व
समिश्रण
निरपेक्ष
केवल चेतन।

६८

भूमिका

अतीत

अभिव्यक्ति

वर्तमान

अनुभूति

भविष्य।

६९

प्रवाह
परम्परा
रूढियाँ
आवर्त्त।

७०

जो

अगणित

वह

प्रकृति का

गणित।

७१

करुणा

अन्त स्रवित

दया

मन द्रवित।

७२

अत्म श्लाघा

विस्मृति

आलोचना

स्मृति